13

मसीहियत उत्तम है!

(7:1-28)

हमने कई बार देखा है कि ''उत्तम'' इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य शब्द है। यहूदी मसीहियों को सम्भवतया यही बताया जा रहा था कि उनका धर्म यहूदी धर्म से घटिया है क्योंकि मसीहियत में कोई *महायाजक,* मन्दिर या बलिदान नहीं है। एक अर्थ में लेखक का जवाब था, ''मसीही बनने के लिए आपको कुछ भी छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। आपको एक *उत्तम महा याजक* और *उत्तम* मन्दिर *उत्तम* बलिदान मिले हैं।'' मसीहियत में सब कुछ ''*उत्तम* है।''

पिछले पाठ में हमने इब्रानियों 7 का अध्ययन आरम्भ किया था। पत्री के मुख्य संदेश अर्थात यह कि यीशु के पास उत्तम *महा याजकाई* है, अध्याय 7 में चर्चा की गई है। यह सच है क्योंकि वह ''मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महा याजक'' (6:20)। हम इस पर चर्चा कर चुके हैं कि ''मलिकिसिदक की रीति पर'' याजक होने का क्या अर्थ है, परन्तु अध्याय 7 से और भी बहुत कुछ सीखने वाला है। अध्याय का अन्तिम भाग पत्री के अन्तिम भाग के कुछ विषयों का पूर्वानुमान लगाता है और कई निष्कर्ष निकालता है। इस बात में हम फिर से अध्याय 7 को देखेंगे और देखेंगे कि आज हमारे लिए उसमें और क्या सबक हैं।

यीशु, *उत्तम* महा याजक

जैसा कि पहले कहा गया है, अध्याय 7 में मुख्य सच्चाई यह है कि यीशु की *महा याजकाई* लेवीय याजकाई से उत्तम है। यहूदी लोग यह बहस कर सकते हैं कि यीशु महायाजक नहीं हो सकता क्योंकि वह लेवी के गोत्र में से नहीं था (देखें आयत 14), परन्तु लेखक ने दिखाया कि यीशु का किसी और गोत्र से होना उसे हमारा *महा याजक* होने के रूप में अपनी भूमिका निभाने के अयोग्य नहीं बनाता। वास्तव में लेखक ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यीशु उत्तम महायाजक है क्योकि वह विलक्षण और सिद्ध (आयत 28); वह राजा है, और वह अपरिवर्तनीय है। वह हमें बचाने के लिए *सर्वदा* जीवित है (आयत 25)।

मसीहियत में सब कुछ *उत्तम* है

तब इसका क्या अर्थ था

इस तथ्य के आधार पर कि मसीहियत में एक उत्तम महायाजक है, इब्रानियों के लेखक ने दावा किया कि *मसीहियत में सब कुछ* उत्तम है। विशेषकर उसमें ''उत्तम आशा'' (आयत 19) और ''उत्तम वाचा'' (आयत 22; देखें 8:6) की बात की। उसने यह भी संकेत दिया कि मसीहियत में ''उत्तम बलिदान'' (7:27; देखें 9:23) और एक उत्तम वेदी (8:2) है। इस प्रकार

से लेखक ने अपने यहूदी मसीही पाठकों को आश्वस्त किया कि मसीहियत किसी भी प्रकार से यहूदी धर्म से कम नहीं है।

अब इसका क्या अर्थ है

क्या हम इस सच्चाई को आज अपने लिए प्रासंगिक बना सकते हैं? मुझे तो यही लगता है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने वहीं से आरम्भ किया, जहां उसके पाठक थे; हमें भी वही करना चाहिए। हम में से अधिकतर लोगों को यह नहीं कहा जा रहा है कि मसीहियत यहूदी धर्म से कम है, परन्तु हमें यह बताया जा रहा *है* कि मसीहियत उससे कम है जो संसार देने की पेशकश करता है। हमें बताया जाता है कि यदि जीवन का आनन्द लेना हो या प्रसिद्ध होना हो या सफल होना हो तो यीशु के मार्ग के बजाय संसार के ढंगों को मानना आवश्यक है। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक यदि आज हमें लिख रहा होता, तो वह हमें यही बताना चाहता कि *मसीहियत उत्तम है* यानी यह संसार द्वारा पेशकश किए जाने वाली हर बात से उत्तम है। उदाहरण के लिए, संसार *अस्थाई* सफलता, आनन्द और प्रसन्नता की पेशकश करता है, जबकि मसीहियत *सनातन* सफलता और आनन्द और प्रसन्नता की पेशकश करती है (देखें 7:25; 11:24-26)।

सिखाने वाले के लिए नोट्स

यह पाठ समीक्षा और चर्चा के लिए बनाया गया है। पहले भाग का इस्तेमाल पीछे अध्ययन की गई सच्चाइयों पर विचार करने के लिए करें। दूसरे भाग का इस्तेमाल पहले बनाई सच्चाई को दिखाने के लिए कि मसीहियत उत्तम है के लिए करें। प्रासंगिकता बनाने पर अपने छात्रों से संसार द्वारा बताए जाने वाले झूठों (जैसे ''यदि आप मसीही हैं तो आपको किसी प्रकार का मनोरंजन नहीं मिल सकता'') के बारे में पूछें। यदि लिखने के लिए आपके पास बड़ा बोर्ड या कागज हो तो दाहिनी ओर इन बातों को लिखें। फिर बाईं और सच्चाई को रखें: मसीहियत के बारे में वास्तव में सच्चाई क्या है। यह अभ्यास छात्रों के मन में पक्के तौर पर यह बनाने के लिए है कि मसीहियत *किसी भी बात* से जो कोई कहीं भी दे सकता है, उत्तम है।

जहां मैं रहता हूं, वह मुख्यतया मसीही लोगों के दिलों और जीवनों के लिए मुकाबला संसार से करना है। जहां आप रहते हैं वहां कोई और धर्म हो सकता है जो मसीहियत से बेहतर होने का दावा कर रहा है। यदि ऐसा है तो मसीहियत और उस धर्म में तुलना को पाठ के साथ अन्तिम भाग में मिलाया जा सकता है।